Sarcouncil Journal of Arts and Literature

ISSN(Online): 2945-364X

Volume- 03| Issue- 06| 2024

Review Article **Received:** 02-05-2024 | **Accepted:** 02-06-2024 | **Published:** 28-06-2024

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोशिएट प्रोफैसर हिन्दी- विभागाध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर

Abstract: यह शोध-पत्र रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण करता है। दिनकर की कविताएँ न केवल स्वतंत्रता संग्राम की गूंज हैं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव, आत्मबल, और नैतिक मूल्यों का सशक्त स्वर भी हैं। 'हुंकार', 'रेणुका', 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' जैसी काव्य रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, आत्मगौरव, सांस्कृतिक चेतना, और सामाजिक न्याय के भाव गहराई से उभरते हैं। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि दिनकर का राष्ट्रवाद संकीर्ण या आक्रामक न होकर संवेदनशील, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित है, जो आज के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है.

Keywords: दिनकर', काव्य, राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के भारतीय काव्य-जगत में यदि किसी एक कवि ने राष्ट्रवाद, संस्कृति, शौर्य और स्वाभिमान को सबसे अधिक मुखरता दी, तो वह नाम है रामधारी सिंह 'दिनकर'। वे हिंदी कविता के 'राष्ट्रीय कवि' के रूप में प्रतिष्ठित हैं। दिनकर की कविता महज काव्यात्मक सौंदर्य से परिपूर्ण नहीं होती, बल्कि वह जनमानस की आत्मा को जाग्रत करने का माध्यम बनती है। उनकी लेखनी में भारतीयता की गरिमा, सांस्कृतिक चेतना, औपनिवेशिक अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह की भावना तथा भविष्य के भारत के प्रति आशा का स्वर अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उभरता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत के नव निर्माण तक, जिस कवि ने अपनी लेखनी से राष्ट्र को चेतना, आत्मगौरव और संघर्ष की शक्ति प्रदान की, वह हैं रामधारी सिंह 'दिनकर'। वे मात्र कवि नहीं, बल्कि जनकवि, विचारक, द्रष्टा, और राष्ट्रनिर्माता थे, जिनकी कविता जनता की चेतना को स्वर देती थी। दिनकर का काव्य एक आंदोलन है—एक विचारशील यात्रा, जो भारत माता के पदचिह्नों पर चलता हुआ संस्कृति, स्वतंत्रता, नैतिकता और शक्ति का उद्घोष करता है।

उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना केवल नारों या भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सुसंगठित दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो ऐतिहासिक यथार्थ, सांस्कृतिक गहराई और मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं से युक्त है।

उनकी रचनाएँ न केवल स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक रूप में देखी जाती हैं, बल्कि आज भी उनमें समकालीन भारत के लिए मार्गदर्शक राष्ट्रबोध विद्यमान है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय दृष्टि:

जीवन और युगधर्म से जुड़ाव:

रामधारी सिंह दिनकर (1908–1974) का जन्म भारत के उस समय हुआ जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। उनका युवावस्था का समय गांधी, नेहरू, सुभाष जैसे नेताओं के उदय का था और भारत की राजनीतिक हलचलों से गूंज रहा था। उन्होंने अपनी कविता को जनआंदोलन का औजार बनाया और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लेखनी को तलवार बना दिया।

राष्ट्रवाद का दर्शन:

दिनकर का राष्ट्रवाद न वैचारिक कट्टरता से उपजा था, न राजनीतिक नारेबाज़ी से। यह राष्ट्रवाद उनके भीतर भारतीय सभ्यता, संस्कृति, और मानवतावादी मूल्यों के गहरे आत्मसात से जन्मा था। वे मानते थे कि "राष्ट्र की आत्मा" केवल सीमा रेखाओं में नहीं, बल्कि उसकी भाषा, संस्कृति, इतिहास और नैतिकता में निहित होती है।

दिनकर जी की राष्ट्रीय दृष्टि बहुआयामी थी। उनकी कविता में:

- राजनीतिक स्वतंत्रता की लालसा है।
- सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का आह्वान है।
- सामाजिक चेतना और नैतिक मूल्यबोध है।

वे मानते थे कि कविता केवल भावों की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह जनता को जाग्रत करने का हथियार भी है। उनके शब्दों में —

"कविता केवल मनोरंजन नहीं, राष्ट्र की आत्मा को जगाने का साधन हो।"

इस दृष्टिकोण ने उनके साहित्य को न केवल कालजयी बनाया, बल्कि राष्ट्र की आत्मा से भी जोड़ दिया।

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर:

.स्वाधीनता संग्राम का समर्थन:

दिनकर का काव्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम से सीधे-सीधे जुड़ा है। वे स्वयं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक जागरूक साक्षी और भागीदार थे। उनकी काव्य कृति **'हुंकार' (1946)** में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जिस आक्रोश और चेतना को शब्द दिए हैं, वह अद्वितीय

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

*Corresponding Author: किरण शर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.16637390

है। '**हुंकार**' राष्ट्रीय विद्रोह की चेतना का घोष है। यह संग्रह उस समय रचा गया जब भारत अंग्रेजों के शासन के अंतिम चरण में था। इस काव्य में उन्होंने **विद्रोह को पवित्र**, और **आत्मसम्मान को अनिवार्य** मानते हुए लिखा:

उदाहरण:

"सीना चमक उठे जिसमें अंगारे लगते हों,
ऐसी हुंकार नहीं तो फिर वह पुकार क्या!"

यह हुंकार केवल भावात्मक आवेश नहीं है, बल्कि **जन जागरण का घोष** है।

आत्मगौरव और स्वाभिमान का संचार:

'दिनकर' भारतीय समाज को उसकी **गौरवशाली विरासत** और **अविचल आत्मबल** की याद दिलाते हैं। उनकी रचना '**रेणुका**' इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उदाहरण:

"यदि स्वर्ग रोकता मुझे, तो नरक को तोड़ आता मैं।"

यह पंक्ति व्यक्ति के **निर्णय की स्वतंत्रता** और **संकोचहीन आत्मबल** की घोषणा है। यह राष्ट्र के नागरिकों को जागरूक और स्वाभिमानी बनाने की प्रेरणा देती है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद:

दिनकर के राष्ट्रवाद में संस्कृति की केंद्रीय भूमिका है। उनका मानना था कि **राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और चेतना ना हो।** उनके लिए भारत माता कोई भौगोलिक सत्ता नहीं, बल्कि **आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप** थी।

उदाहरण (रेणुका):

"धरती की पीड़ा को जिसने, गाया वह कवि सच्चा है।
जो भारत के कण-कण में राम देखे, वही बच्चा है।"

यहां संस्कृति, धर्म और राष्ट्र का त्रैतीय एकात्म भाव प्रकट होता है।

कुरुक्षेत्र: युद्ध बनाम शांति:

'**कुरुक्षेत्र**' में दिनकर ने धर्मयुद्ध की आवश्यकता को रेखांकित किया। यह काव्य शांति का समर्थन करता है, परंतु अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष की अनिवार्यता को भी उजागर करता है।'**कुरुक्षेत्र**' केवल महाभारत की पुनर्कथा नहीं है, बल्कि यह उस युग का दार्शनिक विवेचन है जहाँ **धर्म बनाम अहिंसा, न्याय बनाम तटस्थता** की गहन टकराहट है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ:

"क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दीन बना हो, कायरता का वरण कर।"

यह पंक्ति भारतीय कूटनीति और युद्धनीति दोनों के लिए **नैतिक आधार** का संकेत देती है — अन्याय सहना भी अन्याय है। यहाँ राष्ट्र चेतना **मूल्यनिष्ठ संघर्ष** से जुड़ जाती है।यहाँ राष्ट्र की आत्मरक्षा और न्याय की स्थापना हेतु शक्ति के प्रयोग को **धार्मिक और नैतिक दायित्व** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

रश्मिरथी: कर्ण और आत्मबल:

दिनकर का महाकाव्य '**रश्मिरथी**' केवल महाभारत के कर्ण की कथा नहीं है, यह **जाति-पाँति के भेद, सामाजिक न्याय, संघर्ष और आत्मगौरव** का एक प्रतीकात्मक आख्यान है।'**रश्मिरथी**' में कर्ण के माध्यम से दिनकर ने **जातीय भेदभाव, जन्म आधारित ऊँच-नीच, और व्यवस्था के अन्याय** के विरुद्ध आवाज उठाई। कर्ण की छवि एक ऐसे संघर्षशील, शौर्यवान, और आत्मगौरव से ओतप्रोत नागरिक की है जो **स्वाभिमानी राष्ट्र की आत्मा** है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ:

"जो नतमस्तक हुआ नहीं कभी,
रण में भी जो झुका नहीं।"

कर्ण के माध्यम से दिनकर ने **स्वाभिमानी राष्ट्र नागरिक** का आदर्श खड़ा किया है जो समाज की विषमताओं से लड़कर भी अपनी अस्मिता बनाए रखता है।

भाषा और शैली में राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति:

भाषा:

दिनकर की भाषा संस्कृतनिष्ठ होने के बावजूद सहज, प्रवाहपूर्ण और ओजपूर्ण है। उनकी शैली **वीर रस** और **क्रांतिकारी स्वर** से युक्त है।दिनकर की भाषा ओजपूर्ण, संस्कृतनिष्ठ और भावात्मक है। वे वीर रस के अनुपम कवि हैं, जिनकी शैली में:

- क्रांति का उद्घोष है।
- संस्कृति का गौरव है।
- ओज और तेज का संचार है।
- प्रेरणा और आदर्शवादिता है।
- अनुप्रास और छंद की विविधता है,
- भावनात्मक उफान है,
- सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग है (जैसे अर्जुन, कर्ण, राम, भारतमाता),
- और सबसे प्रमुख – प्रेरणा देने की शक्ति है।

उनके शब्द केवल कविता नहीं, बल्कि **प्रेरणास्पद घोषणापत्र** जैसे लगते हैं जो जनमानस को आंदोलित करते हैं।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

समकालीन प्रासंगिकता:

वर्तमान समय में जब राष्ट्रवाद की परिभाषा राजनीतिक ध्रुवीकरण में उलझती जा रही है, दिनकर का राष्ट्रवाद **एक संतुलित, संवेदनशील और सृजनात्मक दृष्टिकोण** प्रदान करता है।

- यह न तो आक्रामक राष्ट्रवाद है।
- न ही सीमित और संकीर्ण जातीय पहचान का राष्ट्रवाद है।
- बल्कि यह नैतिकता, सांस्कृतिक चेतना और जनसरोकारों से जुड़ा राष्ट्रवाद है।
- आज के युवाओं के लिए दिनकर का काव्य दिशा और दृष्टि दोनों प्रदान करता है।

दिनकर के राष्ट्रवाद की विशेषताएँ:

- **आत्मगौरवपरक:** उनका राष्ट्रवाद आत्मविहीन नहीं, आत्मगौरव से युक्त है।
- **सांस्कृतिक:** पश्चिम के प्रभाव से स्वतंत्र, भारतीय परंपराओं में रचा-बसा।
- **नैतिकता आधारित:** केवल भूमि प्रेम नहीं, अपितु न्याय, धर्म और मानवता के मूल्यों से जुड़ा।
- **प्रगतिशील:** सामाजिक विषमता के विरुद्ध, समता और संघर्ष का पक्षधर।
- **समकालीन प्रासंगिकता:** आज के भारत में राष्ट्रवाद को यदि विवेक, मर्यादा और संवेदनशीलता से देखा जाए, तो दिनकर की दृष्टि अत्यंत उपयोगी है।

समकालीन संदर्भ में दिनकर की प्रासंगिकता

वर्तमान में जब **राष्ट्रवाद राजनीतिक हथियार** बन गया है, दिनकर का राष्ट्रवाद हमें **संवेदनशील, विवेकपूर्ण और समावेशी राष्ट्रबोध** सिखाता है। वे हमें बताते हैं कि:

- सच्चा राष्ट्रप्रेम दूसरों को नीचा दिखाने में नहीं,
- बल्कि अपने **कर्म, संस्कृति और चरित्र** से देश को ऊँचा उठाने में है।

निष्कर्ष:

रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य भारतीय राष्ट्रवाद की **एक जीवंत धारा** है। उनकी कविता में:

- **क्रांति है, लेकिन अराजकता नहीं।**
- **राष्ट्रप्रेम है, लेकिन संकीर्णता नहीं।**
- **संस्कृति का गौरव है, लेकिन दंभ नहीं।**

दिनकर केवल एक कवि नहीं थे; वे **युगद्रष्टा, विचारक और राष्ट्रचेतना के वाहक** थे। आज भी उनके काव्य से हमें आत्मगौरव, न्याय के लिए संघर्ष और सांस्कृतिक समरसता की प्रेरणा मिलती है। रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य राष्ट्रीय चेतना का **ऐसा बहुविध स्रोत** है जो केवल स्वतंत्रता की पुकार नहीं करता, अपितु **संस्कृति, सामाजिक चेतना, नैतिकता और आत्मबल** से जुड़ा हुआ है। उनके साहित्य में राष्ट्र केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं है, बल्कि वह एक **संस्कार-संहिता**, एक **जीवन-दृष्टि** हैदिनकर की कविताएँ आज भी उतनी ही सजीव और प्रभावशाली हैं जितनी स्वतंत्रता संग्राम के समय थीं। वे **युवाओं के लिए पथप्रदर्शक**, **विचारकों के लिए प्रेरक**, और **राष्ट्र के लिए अमर संदेशवाहक** हैं।

संदर्भ सूची:

1. दिनकर, रामधारी सिंह। *रेणुका,* राजकमल प्रकाशन, 1952।
2. दिनकर, रामधारी सिंह। *हुंकार,* लोकभारती प्रकाशन, 1946।
3. दिनकर, रामधारी सिंह। *कुरुक्षेत्र,* भारतीय ज्ञानपीठ, 1946।
4. दिनकर, रामधारी सिंह। *रश्मिरथी,* राजकमल प्रकाशन, 1952।
5. त्रिपाठी, शंभूनाथ। *दिनकर का राष्ट्रबोध और काव्य दृष्टि,* साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 1990।
6. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। *हिंदी साहित्य की भूमिका,* नागरी प्रचारिणी सभा।
7. झा, श्रीराम। *रामधारी सिंह दिनकर की काव्य चेतना,* वाणी प्रकाशन, 2004।
8. पांडेय, रवींद्र। *स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी कविता,* साहित्य भारती, 1981।

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
किरण शर्मा " रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना ". *Sarcouncil Journal of Arts and Literature* 3.6 (2024): pp 27-29.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher